जूलॉजी विभाग में बनेगी लैब

लविवि : केंद्र से मिली 1.09 करोड़ की मदद, उपकरण खरीदने के लिए टेंडर जारी

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के जूलॉजी विभाग में जल्द ही एक नई प्रयोगशाला की स्थापना होगी। प्रयोगशाला स्थापित होने के बाद विभाग के साथ ही अन्य विभाग के शिक्षक और शोधार्थी भी इसका उपयोग कर सकेंगे। इस प्रयोगशाला से पर्यावरण अध्ययन, अज्ञात सैंपल, केमिस्ट्री, बायोकेमिस्ट्री, बॉटनी विषयों में शोध को गति मिलेगी। इस प्रयोगशाला में उपकरण के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग से 1.09 करोड़ रुपये की सहायता मिली है। इसके उपकरण की खरीद के लिए टेंडर जारी कर दिया गया है। नए सत्र की शुरुआत से पहले इसकी स्थापना होने की उम्मीद है।

केंद्र सरकार के अधीन काम करने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की ओर से डीएसटी-फिस्ट योजना के तहत देशभर के विश्वविद्यालयों के विज्ञान संकाय के विभागों को आर्थिक सहायता दी जाती है। लविवि के प्रस्ताव पर पिछले वित्तीय वर्ष में डीएसटी ने चार साल के लिए कुल 7.90 करोड़ रुपये पास किए थे। इसमें से 1.09 करोड़ रुपये जूलॉजी विभाग को मिले हैं। अभी तक इसका उपयोग नहीं हो पाया था। अब इसका उपयोग विभाग में केंद्रीय प्रयोगशाला के लिए दो बड़े उपकरण खरीदने में किया जा रहा है। पहला उपकरण गैस क्रोमैटोग्राफी-मास स्पेक्ट्रोमेट्री (जीएस-एमएस) और दूसरा उपकरण-फ्लो सायटोमीटर है। जीएस-एमएस का उपयोग दवाई की पहचान, पर्यावरण अध्ययन, अज्ञात सैंपल की पहचान में किया जाता है। इस तरह से इस उपकरण की सहायता से जूलॉजी के साथ ही केमिस्ट्री, बायोकेमिस्ट्री, बॉटनी विभागों को शोध में सहायता मिलेगी।

फ्लो सायटोमीटर से होगी ब्लड कैंसर की पहचान

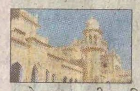

फ्लो सायटोमीटर का उपयोग सेल की पहचान और सेल सॉर्टिंग में किया जाता है। इसकी सहायता से स्वास्थ्य परीक्षण विशेष रूप से ब्लड कैंसर की पहचान में इसका उपयोग किया जाता है। इसके अलावा विज्ञान के अलग-अलग क्षेत्र में प्राथमिक शोध में इसका उपयोग किया जाता है।

> जूलॉजी विभाग में प्रयोगशाला में उपकरण लगाने के लिए टेंडर किया गया है। इससे कई विभाग में शोध को गति मिलेगी। इसके लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग से आर्थिक सहायता मिली है।
>
> -डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव, प्रवक्ता, लविवि

पीएचडी में ऑनलाइन प्रवेश अगले सत्र से

लखनऊ | वरिष्ठ संवाददाता

लखनऊ विश्वविद्यालय अब पीएचडी प्रवेश परीक्षा को ऑनलाइन कराने की तैयारी में है। इसे आगामी शैक्षिक सत्र में होने वाली प्रवेश परीक्षा में लागू किया जाएगा।

विवि प्रशासन का दावा है कि देश के दूसरे विश्वविद्यालयों के छात्रों को आकर्षित करने के लिए यह कवायद की

लखनऊ विश्वविद्यालय

- देश के दूसरे विश्वविद्यालयों के मेधावियों को आकर्षित करेंगे
- पीएचडी के ऑर्डिनेंस पर काम शुरू किया गया

विश्वविद्यालय के नए पीएचडी ऑर्डिनेंस पर काम शुरू हो गया है। कला, वाणिज्य और विज्ञान के

से ऑनलाइन प्रवेश परीक्षा भी कराने की तैयारी है।

इन बदलावों पर काम कर रही है समिति : विश्वविद्यालय ने नए शैक्षिक सत्र में पीएचडी के प्रारूप में काफी बदलाव करने जा रहा है। पार्ट टाइम पीएचडी कराने की तैयारी है। इसके अलावा, कोर्स वर्क के प्रारूप में भी काफी बदलाव किया जाएगा। तकनीकी के इस्तेमाल को भी बढ़ाया जाएगा।